स्वच्छता-हमारी व्यक्तिगत और सामुहिक जिम्मेवारी है

भारतीय संस्कृति की स्पष्ट विचारधारा रही है कि जहा स्वच्छता है, वहा शुद्धता है; जहा शुद्धता है, वहा पवित्रता है; जहा पवित्रता है, वहा प्रभुता है; और जहा प्रभुता है वहा दिव्यता है। ऐसी दृढ़ मान्यता रखनेवाले हमारे देश की आज जो परिस्थिति है, वह देखकर शर्म से सिर झुक जाता है | एक समय था जब हमारे देश को "सोने की चिड़िया" कहा जाता था, जहा पूर्ण स्वच्छता, शुद्धता, पवित्रता और दिव्यता थी। इस वजह से उस समय का समाज पूरी तरह से स्वस्थ और समृद्ध था। लेकिन आज हम अपने देश की परिस्थिति कुछ और ही देख रहे हैं।

हमारे देश में **अ**स्वच्छता, गंदगी, दुर्गंध एक बड़ी समस्या है। गरीबी, जनसंख्या में वृद्धि, साधनो की कमी, यह कुछ कारण इसके लिए कुछ हद तक जिम्मेवार है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कारण तो लोगों की गंदी आदतें है। शिक्षा की कमी के कारण जागरूकता का अभाव है। आज भी, हमारे देश में कई घरों में शौचालय नहीं हैं। कई लोग खुले में शौच करते हैं। घर में शौचालय होने के बावजूद कुछ लोग खुले में बाहर जाना पसंद करते हैं। कहीं भी कचरा फेंक दो; कहीं भी थूक दो; कहीं भी प्लास्टिक या कागज की थैली या पाउच फेंक दो; केले खाओ और सड़क पर कहीं भी उसका छिलका फेंक दो; किसी शर्म के बिना खुले मे पेशाब करना आदि हमारे देश में सामान्य रूप से देखने में आता है। ऐसी स्थिति में हम अपने देश को कैसे साफ रख सकते हैं?

हमारे देश की सरकार के साथ-साथ सरकारी तंत्र कुछ हद तक जिम्मेवार है। विशेष रूप से, राजनेताओं, अधिकारियों और कर्मचारियों की निष्ठा प्रामाणिकता का अभाव और उनके द्वारा किया जानेवाला भ्रष्टाचार स्वच्छता बनाए रखने में विघ्नरूप बनता है। लेकिन जब से कर्मनिष्ठ नरेन्द्र मोदीजी ने हमारे देश की बागडोर, वडाप्रधान के रूप में, संभाली है तब से लोगो में काफी हद तक जागृति आई है और देश स्वच्छता की ओर आगे बढ़ रहा है। |

विश्व के अनेक विकसित दशों में हम जो स्वच्छता देखते हैं और अनुभव करते हैं, उसका महत्वपूर्ण कारण है वहा की प्रजा की स्वच्छता के लिए जागरूकता और उनकी अच्छी आदतें। उन देशों के नागरिक इतने जागरूक हैं कि आप उन्हें कभी भी कचरा, गंदगी फेंकते हुए या थूकते हुए नहीं देख सकते हैं। ऐसे विकसित देशों में, प्रति व्यक्ति फेकने योग्य कचरे की मात्रा, हमारे देश से कई ज्यादा हैं। फिर भी, लोग इतने जागरूक हैं कि वे कचरे को फेकने के लिए घर या बाहर कचरापेटी **(Dust-bin)** का ही उपयोग करते हैं। यदि किसी स्थान पर कोई कचरापेटी उपलब्ध नहीं है, तो वे कचरे को प्लास्टिक बेग या अन्य तरीके से संभालकर रखते हैं और कचरापेटी मिलने पर ही उसमें फेकते है | कहीं भी कोई भी कागज का टुकड़ा फेंकने की हिम्मत नहीं कर सकता। घरके

कचरे के साथ-साथ रसोई घर के गिले सूखे कचरे को भी प्लास्टिक की थैलियों में पैक किया जाता है और कचरा वाहन आने पर उसको दे दिया जाता है |

पिछले कुछ वर्षों में, हमारी सरकारें भी स्वच्छता के लिए जागृत हुई हैं। पिछले वर्षों के दौरान, यूपीए सरकार ने निर्मल भारत अभियान शुरू किया था, उसका थोड़ा असर भी दिखाई दिया था लेकिन सार्वजनिक जागरूकता और सार्वजनिक भागीदारी की कमी के कारण अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सके। वर्तमान एनडीए सरकार थोडी ज्यादा दृढ़ता से एवं स्पष्ट लक्ष के साथ आगे आई है। और नए सिरे से उसने एक "स्वच्छ भारत अभियान" योजना शुरू की है। सरकार इस योजना में लोगों को जुडने और भागीदार बनाने के लिए पूरा प्रयास कर रही है| लोगों को शिक्षित करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। लोग इसकी तारीफ भी कर रहे हैं। लेकिन यह तभी सफल हो सकता है जब देश के लोग इसे स्वीकार करें और सहयोग दें। यदि यह लक्ष्य आने वाले वर्षों में हम सभी के सामूहिक प्रयास से हासिल किया जाता है, तो यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी को सच्ची श्रद्धांजलि देना कहेंगे। देशवासियों को गांधीजी को फिरसे जिंदा करने का यह शानदार अवसर दिया गया है। जिसको हम सबने बड़े दिल से उठा लेना चाहिए और जन आंदोलन के रूप में उसमे सब को जुड़ जाना चाहिए | जब गांधीजी से पूछा गया था कि स्वच्छता या स्वतंत्रता में आपकी पहली पसंद क्या है? गांधीजी द्वारा दिए गए जवाब को आप सभी जानते हैं। उनकी प्राथमिकता हमेशा स्वच्छता रही हैं। उनका दृढ़ विश्वास था कि स्वच्छता होगी तभी मिली हुई स्वतंत्रता का आनंद ले सकेंगे |

इस अभियान में देश के कई बिन-सरकारी संगठनों द्वारा, मीडिया द्वारा, समाज के विशेष व्यक्तियों द्वारा निष्ठापूर्वक प्रयास किए जा रहे हैं। लोगों में कुछ जागरूकता आ रही है। लेकिन अभी और प्रयास की जरूरत है। ऐसी संस्थाओं में से एक, 'ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय', जो एक बिन-सरकारी आंतरराष्ट्रीय संस्था है वह स्वच्छ, नई, स्वर्णिम दुनिया की स्थापना के लक्ष्य के साथ, इस अभियान में अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दे रही है | यह संस्था समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति का संपर्क करके उसको स्वच्छता के विषय में नीचे दिए गए निश्चय करने के लिए प्रतिबद्ध कर रही है|

मैं हृदयपूर्वक दृढ निश्चय करता हूँ कि:

- ✓ " स्वच्छ भारत अभियान" में मैं दिल से सहभागी बनूँगा |
- ✓ मेरे घर, आंगन, गली और गाँव को साफ सुथरा रखूंगा ।
- ✓ मैं खुद गंदगी नहीं करूंगा और दूसरों को भी नहीं करने दूंगा |
- ✓ जहा भी कहीं गंदगी दिखेगी, उसको दूर करने का प्रयत्न करूंगा |
- ✓ मेरे साथ मेरे परिवार, मित्रो तथा अन्य लोगो को भी इस अभियान में जुडने की प्रेरणा दूंगा|
- ✓ वर्ष के 100 घंटे अर्थात सप्ताह के कम से कम 2 घंटे स्वच्छता के लिए निश्चित रूप से दूंगा |
- ✓ 'जहा स्वच्छता है, वहा ही ईश्वर की अनुभूति है, यह याद रखकर सच्चे दिल से स्वच्छ भारत अभियान में सक्रिय रहेने की और दूसरों को भी प्रेरणा देने का मैं विश्वास दिलाता हूँ |

- ✓ स्वच्छता के लिए शुरू किए गए किसी भी सामाजिक या सरकारी कार्यक्रमों में सहयोगी बनकर इसे सफल बनाने का प्रयत्न करूंगा |
- ✓ स्वच्छता को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाकर और अपने देश को फिर से“'स्वर्णिम भारत'” बनाने की कोशिश करूंगा। मैं विचारों और कर्मों की शुद्धता पर भी ध्यान दूंगा |

इसके साथ ही, यह संस्था स्पष्ट रूप से मानती है कि आज की दुनिया की परिस्थिति में बाहरी स्वच्छता की जितनी आवश्यकता है, उससे अधिक, लोगों को अपनी आंतरिक सफाई में सुधार लाने की आवश्यकता है। आज अधिकतर व्यक्ति कामी, क्रोधी, अहंकारी, लोभी, स्वार्थी, असहिष्णु, हिंसक, ईर्ष्यालु होता जा रहा है। समाज में प्रेम, ईमानदारी, निष्ठा, सत्यता, दया, करुणा जैसे मानवीय मूल्य घटते जा रहे हैं। ऐसे समय में व्यक्ति में आंतरिक स्वच्छता को प्रस्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। संस्था इस दिशा मे भी खूब प्रयत्नशील है। आध्यात्मिक ज्ञान और भारतीय संस्कृति की धरोहर समान राजयोग की शिक्षा द्वारा बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार की स्वच्छता के लिए लोगो में जागृति लाने के लिए कटिबद्ध है | संस्था की मुख्य संचालिका रह चुकी ब्रह्माकुमारी जानकीजी को भारत सरकार द्वारा "स्वच्छ भारत अभियान" का ब्रांड एंबेसडर घोषित किया गया था। संस्था का दृढ़ विश्वास है कि "तन मन रहे साफ तो प्रभु रहे साथ"

----- 0 ----- 0 ----

बी. के. प्रफुल्लचंद्र

सान डिएगो ; यु एस ए

(मो) +91 98258 92710